17

हिरण्यगर्भ सूक्त

ऋषियों ने तप तथा दिव्य चक्षुओं से जो ज्ञान प्राप्त किया और जो शब्द राशि का संग्रह किया, वह वेद है। इन्द्रियों के वैकल्य के कारण इन्द्रियजन्य ज्ञान में भ्रम, प्रमाद आदि उत्पन्न होते हैं परन्तु इन्द्रियातीत ज्ञान किसी दूषित इन्द्रिय से नहीं होता है। अत: वह ज्ञान भ्रमप्रमाद आदिदोष वर्जित ही होता है। अत: वैदिक ज्ञान आज भी भ्रम रहित है। यही आश्चर्य है कि कैसे उन ऋषियों ने प्राचीन काल में यह ज्ञान प्राप्त किया। ये चार भेदों में भिन्न वेद ऋग्वेद यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद हैं। उनमे ऋग्वेद में देवता स्तुति है। उसी का अंशभूत यह हिरण्यगर्भ सूक्त यहाँ वर्णित है।

हिरण्यगर्भ सूक्त (ऋ.वे. म-१०.१२१) इस पाठ में पढेंगे। ऋग्वेदीय देवता स्वरूप के अध्ययनकाल में स्पष्ट ही हो जाता है कि ऋग्वेद में एक ही परमसत्ता की स्तुति विविध नामों से की गई है। यह किस लिए होता है? यह प्रश्न उठने पर कह सकते हैं कि सभी देवों के गुणसाम्य से। हिरण्यगर्भ का स्वरूप भी इस तत्त्व का अपवाद भूत नहीं है। बहुत युग पूर्व सम्पूर्ण सृष्टि एक महान जल समूह से व्याप्त थी। उससे देवता स्वरूप तथा बीजभूत हिरण्यगर्भ नूतन सृष्टि के लिए आविर्भूत हुए। हिरण्यगर्भ ही प्रजापति नाम से विख्यात है। वैदिक ऋषि अपने उपास्य देव को सदैव पूजते थे। वे सर्वकार्य सिद्धि के लिए अपने उपास्यदेव को बुलाते हैं। वे प्रजापति को बुलाते हुए कहते हैं हे सत्यधर्मन् प्रजापति, तूने पृथिवी तथा द्युलोक को उत्पन्न किया, आनन्दकारी चन्द्रमा और समस्त जल समूह को उत्पन्न किया, अत: हमें पीडा मत दे। हे प्रजापति, अन्य किसी ने इस समग्र उत्पन्न पदार्थ को व्याप्त नहीं किया। हम जिस इच्छा को आधार मानकर हवि देते हैं वह इच्छा पूर्ण हो। इस प्रकार प्रजापति तथा हिरण्यगर्भ की पूजनीयता थी। तद्विषयक ही यह सूक्त है। इस सूक्त का हिरण्यगर्भ प्राजापति ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, प्रजापति देवता है। ऋग्वेदीय यह सूक्त दशम मण्डल के अन्तर्गत आता है। और इसमें दस ऋचाएं हैं। अत: ये दशर्च सूक्त है।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन से आप सक्षम होंगे :

- वेदों में विद्यमान दार्शनिक सूक्त का परिचय प्राप्त करने में;
- हिरण्यगर्भ सूक्त के मूल मन्त्र सस्वर जानने में;
- हिरण्यगर्भ सूक्त का पदपाठ जानने में;
- हिरण्यगर्भ सूक्त के मन्त्रों का अन्वय करने में;
- सायणाचार्य के मतानुसार हिरण्यगर्भ सूक्त की व्याख्या पढ़ने में;
- ऋजुता से हिरण्यगर्भ सूक्त के अर्थ का अधिगम करने में;
- हिरण्यगर्भ सूक्त के कुछ शब्दों का व्याकरण जानने में;
- हिरण्यगर्भ का स्वरूप जानने में;
- हिरण्यगर्भ की महिमा जानने में;
- वैदिक समाज के चिन्तन का उच्चतम स्तर को जान पाने में।

17.1 मूल पाठ (हिरण्यगर्भसूक्तसमग्र।)

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥१॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥२॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥३॥

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥६॥

आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥७॥

टिप्पणियाँ

यश्चिदापो महिना पर्यपश्यद्दक्षं दधाना जनयन्तीर्यज्ञम्।
यो देवेष्वधि देव एक आसीत्कस्मै देवाय हविषा विधेम॥८॥

मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम॥९॥

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥१०॥

17.2 मूलपाठ

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥१॥

पदपाठः – हिरण्यऽगर्भः। सम्। अवर्तत। अग्रे। भूतस्य। जातः। पतिः। एकः। आसीत्। सः। दाधार। पृथिवीम्। द्याम्। उत। इमाम्। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥१॥

अन्वयः – हिरण्यगर्भः अग्रे समवर्तत, जातः भूतस्य एकः पतिः आसीत्। सः इमां पृथिवीम् उत् द्यां दाधार, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या – हिरण्यगर्भ हिरण्मय अण्डे का गर्भ भूत प्रजापतिर्हिरण्यगर्भ है। तथा तैत्तिरीयकं– 'प्रजापतिर्वै हिरण्यग....र्भः प्रजापतेरनुरूपत्वाय' (तै. सं. ५. ५ .१. २)। अथवा हिरण्मय अण्डा गर्भवति के उदर में हैं अतः यह सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ कहा जाता है। सबसे पहले केवल परमात्मा वा हिरण्यगर्भ थे। उत्पन्न होने पर वे सारे प्राणियों के अधीश्वर थे। उन्होंने ही इस पृथिवी और आकाश को अपने अपने स्थानों में स्थापित किया। उन ''क'' नाम वाले प्रजापति देवता की हम हवी के द्वारा पूजा करेंगे अथवा हम हव्य द्वारा किन देवता की पूजा करें।

सरलार्थ – प्रजापति प्रथम उत्पन्न देव हैं। उत्पन्न होते ही जगत के स्वामी हो गये। उन्होंने द्युलोक और विस्तीर्ण पृथिवी को धारण किया। उनको छोड़कर किसको हवि के द्वारा पूजे अथवा प्रजापति को हवि द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **समवर्तत** – सम्पूर्वक वृद्–धातू से लङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में समवर्तत रूप सिद्ध होता है।
- **दाधार** – धा–धातु से लट्लकार प्रथमपुरुष एकवचन में दाधार रूप सिद्ध होता है।
- **विधेम** – पूजार्थक विध्–धातू से विधिलिङ् लकार उत्तमपुरुष बहुवचन में विधेम रूप सिद्ध होता है।

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते प्रशिषं यस्य देवाः।
यस्य छायामृतं यस्य मृत्युः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥२॥

पदपाठः - **यः। आत्मऽदाः। बलऽदाः। यस्य। विश्वे। उपऽआसते। प्रऽशिषम्। यस्य। देवाः। यस्य। छाया। अमृतम्। यस्य। मृत्युः। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥२॥**

अन्वयः - यः आत्मदाः बलदाः प्रशिषं विश्वे देवाः उपासते। यस्य छाया अमृतं, यस्य छाया मृत्युः, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या - जो प्रजापति आत्मदा अर्थात आत्मा का प्रदाता है। सभी आत्मा उस परमात्मा से उत्पन्न होती हैं। जैसे अग्नि के सानिध्य से द्विस्फुलिङ्ग उत्पन्न होते हैं वैसे ही जो आत्मा का शोधयिता है। 'दैप् शोधने' धातु से 'आतो मनिन्...' से विच् प्रत्यय। बलदा बल का दाता अथवा शोधयिता। और जिसके प्रकृष्ट शासन आज्ञा का विश्व के सभी प्राणि उपासना प्रार्थना अथवा सेवन करते हैं। तथा देव भी जिसके प्रशासन की उपासना करते हैं। जिनकी छाया अमृत रूपिणी है और जिनके वश में मृत्यु है। उन ''क'' नामवाले प्रजापति देवता की हम हवी के द्वारा पूजा करेंगे अथवा हम हव्य द्वारा किन देवता की पूजा करें।

कस्मै के अनैक अर्थ किये हैं व्याख्याकारों ने।

सायणाचार्यके मतमें अर्थ-

१. यहाँ किं शब्द अनिर्ज्ञात स्वरूप है। अतः उसका अर्थ-प्रजापति है।

२. प्रजापति सृष्टी के लिए कामयमान है। अतः प्रजापति की आख्या क है।

३. किम् का अर्थ सुख होता है। सुखरूप वह प्रजापति है। अतः उसे क कहा जाता है।

४. ऐतरेय ब्राह्मण में आख्यान है। वहाँ इन्द्र ने वृत्र को मारने के लिए प्रजापति से शक्ति माँगी। इस प्रकार इन्द्र के द्वारा प्रजापति पूजे गये। तब प्रजापति ने कहा -मेरा महत्त्व तुझे देकर मैं कः कैसे होऊंगा। तब इन्द्र ने प्रत्युत्तर दिया की यदि यह कहते हो कि मैं कः होऊ। तो वैसा ही हो। अतः क प्रजापति की आख्या है।

जब क नाम होता है तो उसकी सर्वनाम संज्ञा नहीं होती है। सर्वनाम संज्ञा के अभाव में कस्मै ऐसा कस्मैयुक्त रूप नहीं होता है। परन्तु यदि किम् सर्वनाम का ही रूप है कः तो यह किं शब्द है। तब सर्वनामत्व से स्मै भाव सिद्ध होता है।

जब क यौगिक होता है तब स्मै योग व्यत्यय के द्वारा द्रष्टव्य है। अर्थात् वैदिक प्रयोग है। अतः लौकिक नियम का व्यत्ययः होता है।

कस्मै में चतुर्थी है। कर्ता अपनी क्रिया और कर्म के द्वारा जिसको अभिप्रैत करता है वह सम्प्रदान होता है। यहाँ कौनसी क्रिया है। क्रिया का ग्रहण करना चाहिए। विधेम क्रियापद है।

टिप्पणियाँ

सरलार्थ – जो हिरण्यगर्भ प्राणदाता बलदाता है, जसके आदेश का पालन सब देव करते हैं, जिसकी छाया अमृत है, और जिसकी छाया मृत्यु है, उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **आत्मदा** – आत्मन्–उपपद पूर्वक दा–धातु से विच्प्रत्यय करने पर प्रथमा बहुवचन में आत्मदा रूप बनता है।
- **बलदाः** – बल उपपद पूर्वक दा–धातु से विच्प्रत्यय करने पर प्रथमा एकवचन में बलदाः रूप सिद्ध होता है।
- **उपासते** – उपपूर्वक आस्–धातू से लट्लकार आत्मनेपद प्रथमपुरुष बहुवचन में उपासते रूप सिद्ध होता है।

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक इद्राजा जगतो बभूव।
य ईशे अस्य द्विपदश्चतुष्पदः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥३॥

पदपाठः – यः। प्राणतः। निऽमिषतः। महिऽत्वा। एकः। इत्। राजा। जगतः। बभूव। यः। ईशे। अस्य। द्विऽपदः। चतुःऽपदः। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥३॥

अन्वयः – यः महित्वा प्राणतः निमिषतः जगतः एकः इत् राजा बभूव, यः अस्य द्विपदः चतुष्पदः ईशे, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या – जो हिरण्यगर्भ प्राण से प्रश्वसत है। 'अन प्राणने' धातु 'शतुरनुमः...' से विभक्ति को उदात्त। दर्शनेंद्रिय वाले। जगत जङ्गम के प्राणिजात के महत्माहात्म्य से एक अद्वितीय राजा ईश्वर हिरण्यगर्भ है। इस परिदृश्यमान दो पैर युक्त मनुष्य तथा चार पैर युक्त गवाश्वादि का जो प्रजापति है। उन ''क'' नाम वाले प्रजापति देवता की हम हवी के द्वारा पूजा करेंगे अथवा हम हव्य द्वारा किन देवता की पूजा करें।

सरलार्थ – जो हिरण्यगर्भ अपनी महिमा से श्वास प्रश्वास ग्रहण करने वाले दर्शनेंद्रिय और गतिशील प्राणिजगत का एका की राजा हुआ। और दो पैर वाले और चार पैर वाले विशिष्ट प्राणियों का ईश्वर है उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **प्राणतः** – प्रपूर्वका अन्–धातु से शतृप्रत्यय के षष्ठी एकवचन में प्राणतः रूप सिद्ध होता है।
- **निमिषतः** – निपूर्वकमिष–धातु से शतृ प्रत्यय के षष्ठ्येकवचन में निमिषतः रूप सिद्ध होता है।

- **ईशे** – ईश्–धातु से लट्लकार प्रथमपुरुषबहुवचन में ईशे रूप सिद्ध होता है। यह वैदिक रूप है। लौकिक में तो इष्टे रूप बनता है।
- **बभूव** – भू धातु से तिप् णल्लिट् (पा०सू० ३.१.१९३) प्रत्यय पूर्व को उदात्तत्व।
- 'ईश ऐश्वर्य'। अदादिक अनुदात्तेत् धातु। श्लोपस्त आत्मनेपदेषुश से अनुदात्तेत्त्व से ल सार्वधातुक अनुदात्तत्व धातुस्वर।
- द्वौ पादौ यस्य स द्विपात्। 'सङ्ख्यासुपूर्वस्य' (पा०सू० ५. ४. १४०) से पाद के अन्त का लोप समासान्त होने से। भसंज्ञा में 'पाद पत्' (पा०सू० ६. ४.१३०) से पद्भाव।

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा यस्य समुद्रं रसया सहाहुः।
यस्येमाः प्रदिशो यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम॥४॥

पदपाठः – यस्य। इमे। हिमऽवन्तः। महित्वा। यस्य। समुद्रम्। रसया। सह। आहुः॥ यस्य। इमाः। प्रऽदिशः। यस्य। बाहू इति। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥४॥

अन्वयः – यस्य महित्वा इमे हिमवन्तः रसया सह समुद्रं यस्य आहुः यस्य इमाः प्रदिशः यस्य बाहू कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या – हिम जिसमें है वह हिमवान्। उससे बहुवचनान्त में सभी पर्वत लक्षित होते हैं। हिमवन्तः हिमवदुप लक्षिताः इमे दृश्यमानाः सर्वे पर्वताः यस्य प्रजापतेः महित्वा महत्त्वं माहात्म्यमैश्वर्यमिति आहुः। तेन सृष्टत्वात्तद्रूपेणावस्थानाद्वा। तथा रसया। रसो जलम्। तद्वती रसा नदी। अर्शआदित्वादच्। जातावेकवचनं रसाभिर्नदीभिः सह समुद्रम्। पूर्ववदेकवचनम्। सर्वान् समुद्रान् यस्य महाभाग्यमिति आहुः कथयन्ति सृष्ट्यभिज्ञाः। यस्य च इमाः प्रदिशः प्राच्यारम्भा आग्नेयाद्याः कोणदिश ईशितव्याः। तथा बाहुः। वचनव्यत्ययः। बाह्वो भुजाः। भुजवत्प्राधान्ययुक्तः प्रदिशश्च यस्य स्वभूताः। तस्मै कस्मै इत्यादि समानं पूर्वेण।

सरलार्थ – जिनकी महिमा से हिम आच्छादित पर्वत, नदियाँ और सागर उत्पन्न हुए हैं। जिनकी महिमा से सृष्टि सागर धरित्री कही जाती है और दिशा जिनकी बाहुस्वरूप है उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **हिमवन्तः** – हिम शब्द से मतुप्प्रत्यय करने पर प्रथमा बहुवचन में हिमवन्तः रूप बनता है।
- आहुः – ब्रूञ्–धातु से लट्लकार प्रथमपुरुषबहुवचन में आहुः रूप बनता है।

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृळ्हा येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
यो अन्तरिक्षे रजसो विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥५॥

पदपाठः – येन। द्यौः। उग्रा। पृथिवी। च। दृळ्हा। येन। स्व१ रिति स्वः। स्तभितम्। येन। नाकः॥ यः। अन्तरिक्षे। रजसः। विऽमानः। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥५॥

अन्वयः – येन उग्रा द्यौः पृथिवी च दृळ्हा, येन स्वः स्तभितं येन नाकः, यः अन्तरिक्षे रजसः विमानः कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या – जिस प्रजापति द्वारा द्यौ, अन्तरिक्ष उग्र अर्थात्विशेष दीप्तिमान है और भूमि को जिसने दृढ अर्थात् स्थिर किया। स्वर्ग को जिसने स्तब्ध किया है। क्योंकि नीचे नहीं है अतः ऊपर ही अवस्थ समझना चाहिए। 'ग्रसितस्कभितस्तभित...' इति निपात्यते। स्वर्गलोक और आदित्यलोक जिसने अन्तरिक्ष में ठहराए हैं और जो अन्तरिक्ष में जल का निर्माता है, उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

सरलार्थ – जिसने द्युलोक को उग्र किया और पृथिवी को दृढ अर्थात् स्थिर किया। स्वर्गलोक और आदित्यलोक जिससे ठहरे हुए हैं। जो अन्तरिक्ष में जल को बनाकर धारण करने वाला है द्य उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **दृळ्हा** – दृह्–धातु क्तप्रत्यय और टाप् करने पर दृळ्हा रूप बनता है।
- **स्तभितम्** – स्तम्भ–धातु से क्तप्रत्यय करने पर स्तम्भितम् रूप बनता है।
- **विमानः** – विपूर्वक मा–धातु से ल्युट् करने पर विमानः रूप बनता है।

पाठगत प्रश्न 17.1

1. हिरण्यगर्भ सूक्त का ऋषि, छन्द और देवता कौन है?
2. हिरण्यगर्भ किसको कहते है?
3. दाधार इसमें लिट्लकार क्यों हुआ?
4. विधेम ये रूप कैसे सिद्ध होगा?
5. प्रशिषम् का क्या अर्थ है?
6. अमृतम् अमृतत्वम् किसकीओर निर्देश कर रहा है?
7. अमृतम् इत्यत्र मृत् में कौनसा स्वर है? (सही उत्तर चुने – उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।)
8. बभूव के भू- में कौन सा स्वर है? (सही उत्तर चुने – उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।)
9. आहुः रूपकिस धातु का है?
10. दृळ्हा शब्दका अर्थ क्या है?

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने अभ्यैक्षेतां मनसा रेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति कस्मै देवाय हविषा विधेम॥६॥

पदपाठः - यम्। क्रन्दसी इति। अवसा। तस्तभाने इति। अभि। ऐक्षेताम्। मनसा। रेजमाने इति॥ यत्र। अधि। सूरः। उत्ऽइतः। विऽभाति। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥६॥

अन्वयः - अवसा तस्तभाने मनसा रेजमाने क्रन्दसी यं मनसा अभ्यैक्षेताम्, यत्र अधि सूरः उदितः विभाति, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या - प्रजापति ने क्रन्दन करते हुए द्युलोक और पृथिवी लोक की रक्षा की। कहा है - यदरोदीत्तदनयो रोदस्त्वम् (तै. ब्रा. २. २. ९. ४)॥ जिस प्रजापति के आधार पर सूर्य उदय प्राप्तकर प्रकाशित होता है। उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

सरलार्थ - प्राणियों की रक्षा के लिए स्थिर किया गया तथा मन के कम्पायमान होने पर द्युलोक और पृथिवी लोक जिसको देखते हैं। जिसके कारण सूर्य उदित होकर चमकता है। उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **क्रन्दसी** - क्रन्द्-धातु से असुन् प्रत्यय स्त्रीलिङ्ग के प्रथमाद्विवचन में क्रन्दसी रूप बनता है।
- **अवसा** - अव्-धातु से असुन्प्रत्यय तृतीया एकवचन में अवसा रूप बनता है।
- **तस्तभाने** - स्तम्भ्-धातु से कानच् और टाप् होने पर प्रथमाद्विवचन में तस्तभाने रूप बनता है।
- **रेजमाने** - रेज्-धातु से कानच्प्रत्यय और टाप् होने पर प्रथमाद्विवचन में रेजमाने रूप बनता है।
- **अभ्यैक्षेताम्** - अभिपूर्वक ईक्ष् दर्शने धातु से लङ् लकार के प्रथमपुरुष द्विवचन में अभ्यैक्षेताम् रूप बनता है।

आपो ह यद्बृहतीर्विश्वमायन्गर्भं दधाना जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः कस्मै देवाय हविषा विधेम॥७॥

पदपाठः - आपः। ह। यत्। बृहतीः। विश्वम्। आयन्। गर्भम्। दधानाः। जनयन्तीः। अग्निम्॥ ततः। देवानाम्। सम्। अवर्तत। असुः। एकः। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥७॥

अन्वयः - यत् ह गर्भ दधाना अग्निं जनयन्तीः बृहती आपः विश्वं आयन् ततः देवानाम् एकः असुः समवर्तत, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या - बृहतीः बृहत्यो=महान। जस् करने पर 'वा छन्दसि' से पूर्वसवर्णदीर्घ। 'बृहन्महतोरुपसङ्ख्यानम्' से ङीप् को उदात्त। अग्निम्-ये केवल उपलक्षण है। अग्नि को उपलक्षित करके समस्त भूतपदार्थ

उत्पन्न करने के बाद गर्भ से उत्पन्न प्रजापति ने धारण किया। केवल जल ही समस्त जगत् में व्याप्त था। उसके बाद सभी देवादिय प्राणियों का प्राणभूत एक प्रजापति उत्पन्न हुआ। जो गर्भ को धारण करता हुआ विश्व को अपने अंदर अवस्थित करता है। उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

सरलार्थ – बृहत् जलसमूह जब समग्र विश्व में व्याप्त था तब देवों ने गर्भरूप से प्रजापति को धारण किया और फिर अग्नि के द्वारा समग्र भुवन को बनाया। उससे देवों का प्राणभूत प्रजापति उत्पन्न हुआ।उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **बृहती:** – ये बृहत्य: का वैदिकरूप है।
- **दधाना:** – धा-धातु से शानच्प्रत्यय और टाप् होने पर प्रथमाबहुवचन में दधाना: रूप बनता है।
- **जनयन्ती:** – जन्-धातु से णिच शतृ और ङीप् करने पर प्रथमाबहुवचन में जनयन्ती: रूपद्य जनयन्त्य: इसका वैदिक रूप है।
- **आयन्** – इ-धातु से लङ् लकार प्रथमपुरुषबहुवचन में आयन् रूप बनेगा।

यश्चिदापो॑ महि॒ना प॒र्यप॑श्य॒द्दक्षं॒ दधा॑ना ज॒नय॑न्तीर्य॒ज्ञम्।
यो दे॒वेष्वधि॑ दे॒व एक॒ आसी॒त्कस्मै॑ दे॒वाय॑ ह॒विषा॑ विधेम॥८॥

पदपाठ: – य:। चि॒त्। आप॒:। म॒हि॒ना। प॒रि॒ऽअप॑श्यत्। दक्ष॑म्। दधा॑ना:। ज॒नय॑न्ती:। य॒ज्ञम्॥ य:। दे॒वेषु॑। अधि॑। दे॒व:। एक॒:। आसी॑त्। कस्मै॑। दे॒वाय॑। ह॒विषा॑। वि॒धेम॥८॥

अन्वय: – दक्षं दधाना: यज्ञं जनयन्ती: आप: य: चित् महिना पर्यपश्यत्, य: देवेषु अधि एक: देव: आसीत्, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या – यज्ञं यज्ञोपलक्षितं विकारजातं जनयन्ती: उत्पादयन्ती: तदर्थं दक्षं प्रपञ्चात्मना वर्धिष्णुं प्रजापतिमात्मनि दधाना: धारयित्री:।ईदृशी: आप:। व्यत्ययेन प्रथमा। अप: प्रलयकालीना: महिना महिम्ना। छान्दसो मलोप: स्वमाहात्म्येन यश्चित् यश्च प्रजापति: पर्यपश्यत् परितो दृष्टवान् य: च देवेष्वधि देवेषु मध्ये देव: तेषामपीश्वर: सन् एक: अद्वितीय: आसीत् भवति। ततं विहाय कं हविषा पूजयेम अथवा प्रजापतिं हविषा पूजयेम।

सरलार्थ – सृष्टि की शक्ति का धारक, सृष्ट्युत्पत्ति रूप यज्ञ के उत्पादक जलसमूह जो भूमिरूप में दिख रहा है, जो देवों का अद्वितीय स्वामी है, उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **महिना** – ये महिम्ना का वैदिक रूप है।
- **दधानाः** – दधातेर्हतौ शानच। 'अभ्यस्तानामादिः' से आद्युदात्त हुआ।
- **आसीत्** – अस्तेश्छान्दसो लङ्। 'अस्तिसिचोऽपृक्ते' (पा०सू० ७. ३. ९६) से इटागम।
- **आपः** – अपः का ये द्वितीयाबहुवचन में वैदिक रूप।
- **पर्यपश्यत्** – परिपूर्वक दृश्-धातु से लङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में पर्यपश्यत् रूप।

मा नो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान।
यश्चापश्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मै देवाय हविषा विधेम॥९॥

पदपाठः – **मा। नः। हिंसीत्। जनिता। यः। पृथिव्याः। यः। वा। दिवम्। सत्यऽधर्मा। जजान॥ यः। च। अपः। चन्द्राः। बृहतीः। जजान। कस्मै। देवाय। हविषा। विधेम॥९॥**

अन्वयः – नः मा हिंसीत्, यः पृथिव्याः जनिता वा यः सत्यधर्मा दिवं जजान, यः च चन्द्राः बृहती अपः जजान, कस्मै देवाय हविषा विधेम।

व्याख्या – वो प्रजापति में कष्टों से बचाता है। जो पृथिवी को उत्पन्न करने वाला है। 'जनिता मन्त्रे' से णिलोप होता है। जिसने सत्यधर्मा अर्थात् सत्य से आच्छादित जगत् को धारण करता है उस प्रजापति ने अन्तरिक्ष आदि सभी लोकों को उत्पन्न किया। जिसने बृहत् चन्द्र के समान आह्लादित करने वाले उदक या जल को बनाया। उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

सरलार्थ – जो पृथिवी का स्रष्टा है, जो जगत् का धारक है और जिसने इस समस्त लोक को बनाया है। जिसने बृहत् दीप्यमान जलराशि को बनाया। जो हमें कष्टों से दूर करता है। उसको छोड़कर हम किसकी हवि के द्वारा पूजा करें अथवा प्रजापति को हवि के द्वारा पूजें।

व्याकरण

- **हिंसीत्** – हिंस्-धातु से लिङ् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में हिंसीत् रूप बनता है।
- 'जनी प्रादुर्भावे'। णिच और वृद्धि होकर 'जनीजृष्क्नसुरञ्ज...' से निषेध करके अम्प्रत्यय के अभाव में तिप् और णल् तथा वृद्धि होकर 'लिति' से प्रत्यय से पूर्व के स्थान पर उदात्त हुआ।
- **जनिता** – जन्-धातु से णिच और तृच् होने पर पुंल्लिङ्ग में प्रथमा एकवचन में जनिता रूप बनता है।
- **जजान** – जन्-धातु से लिट् लकार में प्रथमपुरुष एकवचन में जजान रूप। ये वैदिक रूप है। लौकिक रूप तो जनयामास ही है।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो विश्वा जातानि परि ता बभूव।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु वयं स्याम पतयो रयीणाम्॥१०॥

पदपाठः – प्रजापते। न। त्वत्। एतानि। अन्यः। विश्वा। जातानि। परि। ता। बभूव॥ यत्ऽकामाः। ते। जुहुमः। तत्। नः। अस्तु। वयम्। स्याम। पतयः। रयीणाम्॥१०॥

अन्वयः – प्रजापते त्वत् अन्यः एतानि ता विश्वा जातानि न परि बभूव, यत् कामाः ते जुहुमः, तत् नः अस्तु, वयं रयीणां पतयः स्याम।

व्याख्या – यहां मन्त्र में प्राजापत्यहवि का वर्णन है 'प्रजापते इत्येषानुवाक्या। और लिखा भी है – प्राजापत्य इळादधः प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः' (आश्व. श्रौ. २. १४) इति। केशनखकीटादिभिः दुष्टानि हर्षीष्यनयैवाप्सु प्रक्षिपेत्। सूत्रितं च– 'अपोऽभ्यवहरेयुः प्रजापते न त्वदेतान्यन्यः' (आश्व. श्रौ. ३.१०) इति। चौलादिकर्म में भी ये हवि होम के लिए प्रयुक्त होती है। सूत्रितं च– 'तेषां पुरस्ताच्चतस्र आज्याहुतीर्जुहुयादग्र आयूंषि पवस इति तिसृभिः प्रजापते न त्वदेतान्यन्य इति च' (आश्व. गृ. १.४.४) इति।

सरलार्थ – इस मन्त्र में प्रजापति के बारे में कहा है कि हे प्रजापति ! तुझे छोड़कर अन्य कोई इन समस्त उत्पन्न वस्तुओं में परिव्याप्त नहीं है। जैसी फलप्राप्ति के लिए तुझे उद्देश्य करके यज्ञ करता हूँ वैसा ही फल मुझे प्राप्त होवें। जिससे हम धन ऐश्वर्यों के स्वामी होवें।

व्याकरण

- **जुहुमः** – हु-धातु से लट् लकार के उत्तमपुरुषबहुवचन में जुहुमः रूप।
- **स्याम** – अस्-धातु से विधिलिङ् लकार में उत्तमपुरुषबहुवचन में स्याम रूप।
- **विश्वा** – विश्वशब्द का नपुंसकलिङ्ग में द्वितीयाबहुवचन में विश्वा रूप। ये वैदिक रूप है। लौकिक में विश्वानि रूप बनता है।
- **बभूव** – भू-धातु से लिट् लकार में प्रथमपुरुषएकवचन में बभूव रूप।

पाठगत प्रश्न 17.2

1. अभ्यैक्षेताम् रूप कैसे सिद्ध हुआ?
2. असुः का क्या अर्थ है?
3. बृहतीः का लौकिक रूप क्या है?
4. जनयन्तीः इसका लौकिक रूप क्या है?
5. पर्यपश्यत् इसका क्या अर्थ है?

6. मा नो हिंसीज्जनिता... इत्यादिमन्त्र में पृथिव्याः में पृथिवीशब्द में विभक्त का स्वर क्या होगा। (उचित उत्तर चुनें - उदात्त, अनुदात्त, स्वरित।)

7. जजान रूप कैसे बना?

8. जजान का लौकिक रूप क्या है?

9. आपः का लौकिक रूप क्या है?

10. हिंसीत् किस लकार का में बनता है?

17.3 हिरण्यगर्भसूक्त का सार

ऋग्वेद के दशममण्डल के एक सौ इक्कीसवाँ सूक्त हिरण्यगर्भ सूक्त है। वेद के बहुत से दार्शनिक सूक्तों यह सूक्त अन्यतम है। इस सूक्त का ऋषि हिरण्यगर्भ, छन्द त्रिष्टुप्, प्रजापतिर्देवता है। छन्दोबद्ध और पादबद्धऋङ् मन्त्रों की देवस्तुति देवों को उद्देश्य करके अभीष्ट प्रार्थना आदि मुख्य रूप की गयी है। तथापि कुछ मन्त्र ऐसे हैं जिनमें उच्चतर दार्शनिकमत सम्यक् रूप से प्रकटित देखा जाता है। ऋग्वेद के दशममण्डल के अन्तर्गत आया हुआ हिरण्यगर्भ सूक्त उनमें प्रमुख है। यह सूक्त प्राचीन काल से प्रतिष्ठा प्राप्त आर्यसमाज और आर्यगण की दार्शनिक चिन्तन धारा के प्रवाह के विषय में प्रामाणिकता है।

ऋग्वेद के देवतातत्त्व में प्रकृति पूजा का आश्रय लिया जाता है। यहाँ देवता विभिन्न प्राकृतिक शक्तियों के प्रतिनिधि स्वरूप हैं। परन्तु हिरण्यगर्भ सूक्त की कोई प्राकृतिक भित्ति नहीं है। अपितु मन को दीप्त करने वाले ऋषियों ने गम्भीर ध्यान से जिस जगत और सृष्टी के रहस्य को जाना। वही वेद में हिरण्यगर्भ आदि के रूपमें प्रकटित किया गया।

इस सूक्त में परमात्मा ही जगन्नियामक है, यह स्तुति की गई है। ऋग्वेद के हिरण्यगर्भ सूक्त का देवता हिरण्यगर्भ प्रजापति स्वयं है। हिरण्मय अण्ड का गर्भभूत प्रजापति हिरण्यगर्भ है। अथवा हिरण्मय अण्ड गर्भवत् जिसके उदरमें है वह सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ है। और वह 'क' शब्द से भी जाना जाता है। यज्ञकर्ता फल की कामना करने वाले यज्ञ करते हैं। और वे जिस फलकी कामना से यज्ञ करते हैं वह फल लाभ हो ऐसी उनकी इच्छा होती है। धन लाभ इतना हो कि जिससे वे धन के स्वामी हो जाए। ऐसी कामना करने वाले याजक कामना पूर्ति के लिए हिरण्यगर्भ को हवि देते हैं और हिरण्यगर्भ की स्तुति करते हुए प्रार्थना करते हैं कि उनकी कामनापूर्ण होवें।

याज्ञिक ऋषियों की स्तुति में हिरण्यगर्भ इस प्रकार वर्णित है -संसार की उत्पत्ति के समय प्रथम हिरण्यगर्भरूप परमात्मा ही आविर्भूत हुआ। अतः समग्र संसार का वो ही एक स्वामी है। जिसने इन पृथिवी और द्युलोक को धारण किया है। परमात्मा से सभी उत्पन्न होते है इसलिए आत्मा और बल का दाता वो ही है। क्योंकि कहा भी है - 'य आत्मदा बलदा'।। जगत् में सभी प्राणी उसी की आज्ञा पालन करते है। वो ही समस्त प्राणियों को उत्पन्न करने वाला ईश्वर है।

टिप्पणियाँ

उसी की महिमा से हिमालयादि पर्वत और महाभाग्य, नदी सागरादि बने उसकी भुजाएं सभी दिशाओं में है। उसी ने द्यु, अन्तरिक्ष और भूमि को धारण किया है, स्वर्ग को स्थिर करता है और अन्तरिक्ष में जल निर्मित किया। लोक रक्षार्थ द्यु और पृथिवी उसी से प्रार्थना करते है। हिरण्यगर्भ के आश्रय से ही सूर्य उदित होकर चमकता है। सभी देव उसी के आदेशानुसार कार्य करते है। इसीलिये कहा है कि- ''उपासते प्रशिषं यस्य देवा:''। मृत्यु और मुक्ति का कारण वो ही है। वो सभी प्राणियों का नियन्ता तथा स्थावर और जङ्गमात्मक पदार्थों का स्वामी है।

वियदादिभूतजातं जनयन्त्य: आप: प्रजापतिं धारयन्त्य: विश्वं व्याप्नुवन्। इसीलिये वो समस्त प्राणियों का प्राणभूत है। जल के विकार से सभी को उत्पन्न करता है। जिसके लिए उस दक्ष प्रजापति को स्वयं में धारण करता है। उन्हीं के माहात्म्य से प्रजापति सब ओर देखता है। वो ही देवों का अद्वितीय या एकमात्र ईश्वर है।

इस प्रकाण्ड सृष्टि तत्त्व का मूलभूत् सर्वव्यापी और सुमहान् ईश्वर ही है। वो कभी पुरुषरूप से, कभी हिरण्यगर्भ रूप से कभी प्रजापतिरूप से और कभी ब्रह्मरूप में सुशोभित होता है। वो असत् से रहित,अव्यक्त,प्रकाशित सत्स्वरूप वाङ्मयरूप हिरण्यगर्भ है। वो ही स्रष्टा और सृष्टि का आदिपुरुष है। वो अव्यक्त परब्रह्म का व्यक्तरूप है।

जो भूमि का स्रष्टा है और जो समस्त लोक का जनयिता सत्यधर्मा है द्यु जो चन्द्र, जल आदि का भी उत्पादक प्रजापति है, हमें कष्टों से बचाता है। वर्तमान विश्व और सभी भूत पदार्थों को उसके अलावा कोई नहीं धारण करता है अर्थात् सब में वो ही व्याप्त है द्य वो ही इस सब को धारणकर उत्पन्नकर सकता है।

17.4 हिरण्यगर्भ का स्वरूप

ऋग्वेद के दशवें मण्डल के हिरण्यगर्भसूक्त में प्रजापति के पुत्र हिरण्यगर्भ की विशिष्टता वर्णित है। **हिरण्मयस्य अण्डस्य गर्भभूत: प्रजापति: हिरण्यगर्भ:।** या फिर हिरण्मय अण्ड जो गर्भरूप से जिसके उदर में है, वो सूत्रात्मा हिरण्यगर्भ है। जिसको क-शब्दसे कहा गया है।इस समस्त माया जगत् का अध्यक्ष ही परमात्मा है। जगत सृष्टि की इच्छा से परमात्मा प्रपञ्च की उत्पत्ति से पहले हिरण्यगर्भ रूप में उत्पन्न हुआ। वो परमात्मा ही हिरण्यगर्भ है। तथापि उपाधिभूतानां वियदादीनां सूक्ष्मभूतानां उत्पत्ति: तस्मात् तदुपहित: अपि उत्पन्न: इति उच्यते। इसप्रकार हिरण्यगर्भ अद्वितीय होते हुए भी समस्त जगत् का ईश्वर है, द्यु और पृथिवी लोक को धारण करता है। क उसके सुखरूप का नाम है या फिर क इन्द्र का वाचक होने से प्रजापति कहलाता है।

मयाध्यक्षेण प्रकृति: सूयते सचराचरम्ये गीता की पंक्ति यहाँ प्रासङ्गिक है।

परमात्मा से सभी उत्पन्न होते है फिर हिरण्यगर्भ उनमें आत्मसत्ता के संस्थापक रूप में कहलाता है और बल का दाता भी वो ही है। जगत् में सभी प्राणी उसके आज्ञा का पालन करते है। वो ही प्राणियों का उत्पन्न कर्ता ईश्वर है।

उसी की महिमा से हिमालयादि पर्वत और महाभाग्य, नदी सागरादि बने। उसकी भुजाएं सभी दिशाओं में है। उसी ने द्यु, अन्तरिक्ष और भूमि को धारण किया है, स्वर्ग को स्थिर करता है और अन्तरिक्ष में जल निर्मित किया। लोक रक्षार्थ द्यु और पृथिवी उसी से प्रार्थना करते है। हिरण्यगर्भ के आश्रय से ही सूर्य उदित होकर चमकता है।

वियदादिभूतजातं जनयन्त्यः आपः प्रजापतिं धारयन्त्यः विश्वं व्याप्नुवन्। इसीलिये वो समस्त प्राणियों का प्राणभूत है। जल के विकार से सभी को उत्पन्न करता है। जिसके लिए उस दक्ष प्रजापति को स्वयं में धारण करता है। उन्हीं के माहात्म्य से प्रजापति सब ओर देखता है। वो ही देवों का अद्वितीय या एकमात्र ईश्वर है।

जो भूमि का स्रष्टा है और जो समस्त लोक का जनयिता सत्यधर्मा है द्य जो चन्द्र, जल आदि का भी उत्पादक प्रजापति है, हमें कष्टों से बचाता है। वर्तमान विश्व और सभी भूत पदार्थों को उसके अलावा कोई नहीं धारण करता है अर्थात् सब में वो ही व्याप्त है द्य वो ही इस सब को धारणकर उत्पन्नकर सकता है।

सृष्टिक्रम का वर्णन करने वाली निम्नोक्तगीतावचन यहाँ प्रासङ्गिक है –

अन्नाद्भवन्ति भूतानि पर्जन्यादन्नसम्भवः।
यज्ञाद्भवति पर्जन्यो यज्ञः कर्मसमुद्भवः॥३-१४॥

कर्म ब्रह्मोद्भवं विद्धि ब्रह्माक्षरसमुद्भवम्।
तस्मात्सर्वगतं ब्रह्म नित्यं यज्ञे प्रतिष्ठितम्॥३-१५॥

पाठ का सार

हिरण्यगर्भसूक्त में दश मन्त्र हैं। इसमें जो दस मन्त्रों से जो प्रतिपादित है वो यहां सार रूप में कहते है। इस सूक्त में हिरण्यगर्भ के विविधगुण वर्णित है। और उसकी प्रशंसा करते हुए कहते है कि उसको छोड़कर और किसकी हवि द्वारा पूजा करूं। अर्थात् इसप्रकार का जो हिरण्यगर्भ है वो ही पूजनीय है। सर्वप्रथम हिरण्यगर्भ उत्पन्न हुआ। प्रथम उत्पन्न होने पर समग्रजगत् का स्वामी हुआ। उसी ने समग्रद्युलोक तथा पृथिवी को धारण किया है। वो ही प्राणदाता और बलदाता है, जिसके आदेश की पालना सभी देवता करते हैं। जिसकी छाया जन्म व मृत्यु के सदृश है। वो अपनी महिमा से श्वास-प्रश्वास ग्राहक पक्षियों और गमनशील प्राणियों का एक ही राजा है। जिसकी महिमा से हिमवान् पर्वत बने औरनदी व सागर उत्पन्न हुए। जिसकी महिमा से द्युलोक और पृथिवी स्थिर है द्य जिसने स्वर्गलोक और नागलोक को स्थिर किया है। जिसके कारण सूर्य उदित होता है। संकट समय में जिसकी ओर सभी रक्षा के लिए देखते है। वृहत् जलसमूह जब समग्र विश्व में परिव्याप्त था तब देवों ने गर्भरूप में धारण किया और अग्नि को उपलक्षित और समग्र भुवन को बनाया। वो ही देवताओं का एकमात्र स्वामी है।

पाठांत प्रश्न

1. हिरण्यगर्भसूक्त का सार लिखो?
2. हिरण्यगर्भ की महिमा का वर्णन करो।
3. हिरण्यगर्भः समवर्रताग्रे... मन्त्र की व्याख्या करो।
4. मा नो हिंसीज्जनिता... मन्त्र की व्याख्या करो।
5. यः प्राणतो निमिषतो... मन्त्र की व्याख्या करो।
6. हिरण्यगर्भ का स्वरूप लिखो।
7. हिरण्यगर्भसूक्त में कस्मै शब्द के विषय में लघुलेख लिखो।
8. मा नो हिंसीज्जनिताङ्घ्रमन्त्र की व्याख्या करो।
9. यश्चिदापो महिना ङ्घ्र. मन्त्र की व्याख्या करो।
10. यं कन्द्रसी अवसा तस्तभाने --- मन्त्र की व्याख्या करो।
11. य आत्मदा बलदा...मन्त्र की व्याख्या करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

17.1

1. हिरण्यगर्भ ऋषि, त्रिष्टुप् छन्द, प्रजापति देवता।
2. हिरण्मयोऽण्डो गर्भवद्यस्योदरे वर्तते सोऽसौ सूत्रात्मा हिरण्यगर्भः।
3. छन्दसि लुङ्लङ्लिटः सूत्र से नित्य लिट् हुआ।
4. पूजार्थक विध्-धातु से विधिलिङ में उत्तमपुरुषबहुवचन।
5. प्रकृष्टं शासनम्।
6. भावप्रधान।
7. उदात्त।
8. उदात्त।

9. ब्रू-धातु से।

10. स्थिर किया गया।

17.2

1. अभिपूर्वक ईक्ष्-धातु से लङ् लकार प्रथमपुरुषद्विवचन में।

2. प्राणभूत एक प्रजापति है।

3. वृहत्यः।

4. जनयन्त्यः।

5. सभी ओर देखा।

6. उदात्त।

7. जन्-धातु से लिट् लकार प्रथमपुरुष एकवचन में।

8. जनयामास।

9. अपः।

10. लिङ् लकार में।

॥ सत्रहवां पाठ समाप्त ॥